**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 402-403**

# कबीर विमर्श

**डॉ0 जयराम त्रिपाठी**

सहा0 प्रोफेसर (हिन्दी), हेमवती नंदन बहु0 राज0 स्नातको0 महा0 नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

**सारांश**
संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य के अनेक महाकवियों के समान कबीर के प्रारंभिक जीवन एवं जन्म के संदर्भ में विद्वानों के समक्ष एकमत नहीं हैं इसका सबसे बड़ा कारण तो इन विभूतियों का अपने संदर्भ में न लिखना ही है पर कबीर के साथ एक और बड़ी घटना उन्हें कबीर पंथ के अनुयायियों द्वारा ईश्वर के रूप में स्थापित करने की होड़ भी जुड़ी हुई है। कबीर को ईश्वर मान लेने पर उनके जन्म आदि की ढेर सारी पारलौकिक घटनाएँ जुड़ गईं इनके जुड़ने के बाद उनके जन्म का निर्णय और अधिक दुरूह और कठिन हो गया। कबीर ने अपने जन्म के सयम के संदर्भ में कुछ नहीं लिखा है, इनके द्वारा कहे गये अमृत वचनों में इनके परिवार एवं इनसे जुड़ी हुई अन्य अनेक बातों का पता चलता है पर जन्म का स्पष्ट पता नहीं चल पाता है।

**मूल शब्द:** कबीर, भाषा, भक्ति एवं रहस्यवाद

## प्रस्तावना

**डॉ0 राजवीर सिंह ने कबीर के अध्ययन के क्रम में लिखा है**

''कबीर के व्यक्तित्व की यही लापरवाही उन्हें वर्तमान की मूल्य मूढ़ता के सम्मुख पस्त होने से बचाती है और उन्हें निरन्तर सक्रिय तथा उद्बुद्ध रखती है। धर्म और जाति के नाम पर जो बहुत सारी गतानुगतिकता और मुर्दा वर्णनाएँ जन–जीवन को संकुल किये हुए थी, कबीर उनसे टक्कर लेने का हौसला रखते थे। इस काम में वे अकेले थे, लेकिन उन्हें कभी निराशा नहीं हुई।''[1]

कबीर को परमात्मा नहीं बल्कि महात्मा के रूप में स्वीकार करने वाले अनेक विद्वानों ने उनके जन्म के संदर्भ में शोध कर कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले हैं। इन निष्कर्षों के माध्यम से बहुसंख्यक लोग कबीर के जन्म समय एवं जन्म स्थान को अग्र लिखित प्रकार से स्वीकार करते हैं।

जन्म समय के विषय में उल्लेख न होने के कारण कबीर के जन्म का निर्धारण रामानन्द के जन्म के आधार पर किया जाता है क्योंकि रामानन्द के जन्म मृत्यु का प्रामाणिक विवरण है। अधिकांश कबीर मर्मज्ञों ने रामानन्द को कबीर का गुरु स्वीकार किया है, कबीर पंथ का भी यही मत है। रामानन्द का जन्म वर्ष सं0 1385 एवं मृत्यु वर्ष 1505 है। कबीर का जन्म सं0 1455 मान लेने पर वह कबीर के सामने 50 वर्ष उपस्थित रहे। कबीर चरित्र बोध में जन्मतिथि विषयक निम्न पद को डा0 श्याम सुन्दर दास ने भी प्रामाणिक माना है–

''चौदह सौ पचपन साल गए
चंद्रवार एक ठाठ ठए।
जेठ सुदी बरसाइत को
पूरनमासी तिथि प्रगट भए।
घन गरजे दामिनी दमके
बूदैं बरसैं झर लाग गए।
लहर तालाब में कमल खिले
तहँ कबीर भानु प्रगट भए।।

कुछ विद्वान सन्त पीपा के जन्म से जोड़कर कबीर के जन्म तिथि का निर्धारण करते हैं। परन्तु इस आधार पर करने से उनका जन्म सं0 1425 के पूर्व निर्धारित करना पड़ेगा और उनकी आयु 150 वर्ष से अधिक हो जायेगी अतः यह मत अधिक स्वीकार्य नहीं है।

सुप्रसिद्ध विद्वान पुरुषोत्तम अग्रवाल ने कबीर पर लिखते हुए लिखा है ''कबीर के अध्ययन की समस्याएँ भक्ति संवेदना के भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन की समस्यायें भी हैं।''[2]

इसे विडंबना ही कहेंगे कि हमारे अधिकांश महान् पूर्वजों ने अपने बारे में प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं कहा है। कबीर का अर्थ होता है महान्–इस शब्द को सार्थक करते हुए कबीर का सम्पूर्ण वृत्तांत एक अलौकिकता लिए है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी महान रचना 'कबीर' में लिखा है कि कबीर का कथन सप्रयास न होकर स्वतः निःस्तृत है इस कारण उसमें कवि केशव की तरह कोई बनावटीपन नहीं है, स्पष्टता कबीर के व्यक्तित्व निर्माण का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

''ऐसे थे कबीर। सिर से लेकर पैर तक मस्त–मौला स्वभाव से फक्कड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के सामने प्रचंड, दिल के साफ दिमाग के दुरुस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वंदनीय, जो कुछ कहते थे अनुभव के आधार पर कहते थे, इसीलिए उनकी उक्तियाँ बेधने वाली और व्यंग्य चोट करने वाले होते थे।''[3]

वाणी की सहजता के कारण कबीर के वचनों का प्रभाव पाठक के मन में सीधा पड़ता है। उनकी वाणी की एक विशेषता यह भी है कि अपने उपमानों–उदाहरणों का चयन एक दम जन सामान्य के बीच से करते हैं।

**कबीर ने कहा है–**

''मन ऐसो निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
पाछे पाछे हरि फिरैं, कहत कबीर–कबीर।।''

इस प्रकार की सहजता का मिलना न केवल हिन्दी बल्कि किसी भी साहित्य में दुर्लभ है, कबीर ने अपना पैतृक काम जीवन पर्यन्त किया, गृहस्थ जीवन में रहे पर उनका कथन यही है कि ईश्वर प्राप्ति के लिए सबसे अधिक आवश्यक है मन की पवित्रता यदि वह ही पवित्र नहीं है तो इधर–उधर भटकने का अर्थ समाप्त हो जाता

है और यदि आपने मन को पवित्र कर लिया तो फिर आपको ईश्वर को खोजने की कोई आवश्यकता नहीं है वरन् वह स्वयं ही आपको खोजते हुए आयेगा। इसी प्रकार कबीर ने ईश्वर की प्राप्ति के लिए धर्मशास्त्र के ज्ञान को भी महत्व नहीं दिया उनका कथन है–

''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का पढै सो पंडित होय।।''

जहां हम सूर और तुलसी के साहित्य में दैन्य भाव देखते हैं वही कबीर का साहित्य अक्खड़ता और स्वाभिमान से भरा हुआ है। कबीर में अपनी अक्खड प्रकृति के कारण कहीं पर भी स्वयं को न्यून मानने का भाव दिखाई नहीं पड़ता है यदि वे पढ़े लिखे नहीं है तो यह मानने में शर्म नहीं दिखती है–
''मसि कागद छुयों नहीं कलम गही नहिं हाथ'' कहकर वह स्वयं स्वीकार कर लेते हैं कि उनका ज्ञान स्वानुभूत ज्ञान है पढ़ा और सुना हुआ नहीं। इसी प्रकार कबीर का सम्पूर्ण साहित्य यद्यपि अत्यन्त सहज है परंतु यह सहजता आलोचक के समाने कठिनाई उत्पन्न कर देती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भक्ति काल के चारों मूर्धन्य कवियों कबीर, जायसी, सूर और तुलसी में सबसे कम स्थान कबीर को दिया है, कबीर के विवेचन की अंतिम पंक्ति है '' भाषा बहुत परिष्कृत और परिमार्जित न होने पर भी कबीर की उक्तियों में कहीं कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें बड़ी प्रखर थी इसमें संदेह नहीं।''[4] आचार्य शुक्ल ने भाषा की न्यूनता का जो कारण दिया है उसका उत्तर जैसे कबीर स्वयं दे गये थे–

''यह जिन जानौ गीत है यह निज ब्रह्म विचार''

इसके बाद आचार्य हजारी प्रसादि द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहकर भाषा की चर्चा परिचर्चा ही समाप्त कर दी। इस प्रकार हम देखते है कि कबीर का साहित्य न केवल अध्यात्म बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी समृद्ध और प्रासंगिक है।

## सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 राजदेव सिंह ''कबीर, आधुनिक संदर्भ में (लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद–2008) पृष्ठ–13
2. डॉ0 पुरुषोत्तम अग्रवाल : अकथ कहानी प्रेम की (राजकमल प्रकाशन :2009) पृष्ठ–15
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : कबीर राजकमल प्रकाशनः 2016) पृष्ठ–134
4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी–1999) पृष्ठ–45